नव भारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

सड़क हादसे ; सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी का संज्ञान लें

भारत में सड़कें चौड़ी हो रही हैं, एक्सप्रेस-वे बन रहे हैं, गाड़ियों की संख्या रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच चुकी है, लेकिन सड़क पर चलने की संस्कृति अब भी बेहद अव्यवस्थित है. यही कारण है कि सुप्रीम कोर्ट को यह टिप्पणी करनी पड़ी कि भारत में 'लेन ड्राइविंग' जैसी कोई अवधारणा ही नहीं बची है. अदालत की यह टिप्पणी केवल कानूनी टिप्पणी नहीं, बल्कि देश की सड़क व्यवस्था का कठोर सामाजिक और प्रशासनिक सच है.

देश में हर दिन औसतन 546 लोगों की सड़क दुर्घटनाओं में मौत होना किसी युद्ध जैसी स्थिति से कम नहीं है. एनसीआरबी के अनुसार वर्ष 2024 में लगभग 1.99 लाख लोगों की जान सड़क हादसों में गई. यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं, बल्कि हजारों परिवारों के उजड़ने, बच्चों के अनाथ होने और देश की आर्थिक उत्पादकता पर भारी चोट का प्रतीक है. सड़क दुर्घटनाओं की सामाजिक और आर्थिक लागत भारत की जीडीपी का 3.14 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है. यह बताता है कि सड़क सुरक्षा केवल ट्रैफिक विभाग का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास और मानव सुरक्षा का मुद्दा है.

सबसे गंभीर बात यह है कि दुर्घटनाओं का बड़ा कारण तकनीकी कमी नहीं, बल्कि अनुशासनहीनता है. भारत में अधिकांश लोग लेन अनुशासन का पालन नहीं करते. ओवरटेकिंग की होड़, गलत दिशा में वाहन चलाना, बिना संकेत लेन बदलना, तेज गति और मोबाइल फोन का उपयोग आज आम दृश्य बन चुके हैं. सड़कें नियमों से नहीं, बल्कि 'जुगाड़ मानसिकता' से संचालित होती दिखाई देती हैं. यही अव्यवस्था दुर्घटनाओं को जन्म देती है.बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट ने सार्वजनिक वाहनों में ट्रैकिंग डिवाइस और पैनिक बटन नहीं लगाए जाने पर भी चिंता जताई है. यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि अनिवार्य नियम होने के बावजूद देश में एक प्रतिशत से भी कम सार्वजनिक वाहनों में ये सुरक्षा उपकरण लगे हैं. यह केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि यात्रियों की सुरक्षा के प्रति गंभीर उदासीनता है. यदि बसों और सार्वजनिक वाहनों में रियल-टाइम ट्रैकिंग और इमरजेंसी अलर्ट सिस्टम प्रभावी ढंग से लागू हो जाएं, तो दुर्घटनाओं और अपराध दोनों को काफी हद तक रोका जा सकता है.

दोपहिया वाहन दुर्घटनाओं में 48 प्रतिशत से अधिक मौतें होना भी चिंताजनक संकेत है. हेलमेट न पहनना, तीन सवारी बैठाना और तेज गति से वाहन चलाना युवाओं में 'स्टाइल' का हिस्सा बन चुका है. दरअसल,सड़क सुरक्षा को कानून के डर से नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करना होगा.

यह भी ध्यान देने योग्य है कि सबसे अधिक दुर्घटनाएं शाम 6 बजे से रात 9 बजे के बीच होती हैं. इसका अर्थ है कि ट्रैफिक प्रबंधन, स्ट्रीट लाइट, पुलिस निगरानी और ड्राइवर थकान जैसे मुद्दों पर गंभीरता से काम करने की आवश्यकता है. ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 60 प्रतिशत हादसे होना यह दर्शाता है कि सड़क सुरक्षा अभियान केवल महानगरों तक सीमित नहीं रह सकते.

भारत को अब सड़क निर्माण के साथ 'सड़क संस्कृति' निर्माण पर भी उतना ही ध्यान देना होगा. स्कूलों में ट्रैफिक शिक्षा, सख्त जुर्माना, तकनीकी निगरानी और लाइसेंस प्रक्रिया में पारदर्शिता जरूरी है. सड़क पर अनुशासन केवल कानून से नहीं, बल्कि नागरिक चेतना से आएगा. यदि यह नहीं बदला, तो आधुनिक हाईवे भी मौत के रास्ते बनते रहेंगे.

बच्चों को भोजन के अलावा भी और चीजें चाहिए

डॉ. सरथ गोपालन

> शुरुआती बचपन में पोषण किसी भी देश के लिए सबसे अधिक लाभ देने वाला निवेश है. जब बच्चों को उनके विकसित होते मस्तिष्क के लिए जरूरी सूक्ष्म पोषक तत्व, सही देखभाल का वातावरण और सही मानसिक व सामाजिक प्रोत्साहन मिलता है तो उसका लाभ पूरी जिंदगी मिलता है. ऐसे बच्चे बेहतर विद्यार्थी बनते हैं, आगे चलकर अधिक सक्षम और उत्पादक नागरिक बनते हैं और समाज भी अधिक मजबूत तथा सक्षम बनता है। भारत के पास विकसित भारत का सपना है. उसके पास व्यवस्थाएं हैं. उसके पास विज्ञान है. अब जरूरत इस बात की है कि शुरुआती बचपन के पोषण को केवल कल्याणकारी योजना का हिस्सा न माना जाए, बल्कि उसे उस बुनियाद के रूप में देखा जाए, जिस पर बाकी सब कुछ टिका है.

कुछ समय पहले मेरे क्लिनिक में पांच साल की एक बच्ची लाई गई. वह अपनी उम्र के बच्चों की तुलना में विकास के कई चरणों में पीछे लग रही थी. उसकी बोलने की गति धीमी थी और वह अपने हमउम्र बच्चों जितनी सक्रिय या जुड़ी हुई नहीं दिख रही थी. उसके विकास के आकलन में वह तीन साल की बच्ची के स्तर पर पाई गई. उसकी मां बहुत चिंतित थीं. बच्ची बीमार नहीं थी. कोई ऐसी बीमारी या निदान नहीं था जो इसकी वजह समझा सके. लेकिन जब हमने कोविड-19 के पिछले दो वर्षों के बारे में बात की, तो तस्वीर साफ होने लगी.

लंबे लॉकडाउन के कारण स्कूल बंद रहे, वह ज्यादातर समय घर पर रही, खेल की जगह स्क्रीन ने ले ली और भोजन पहले की तुलना में अधिक साधारण और सीमित हो गया. उन शांत वर्षों में उसके मस्तिष्क को वह सब नहीं मिल पाया जिसकी उसे बढ़ने के लिए जरूरत थी. वह कोई अपवाद नहीं थी. अलग-अलग क्लिनिकों में बाल रोग विशेषज्ञ और विकास विशेषज्ञ एक ही तरह की स्थिति देख रहे थे- ऐसे बच्चे जो शारीरिक रूप से स्वस्थ थे, लेकिन विकास में पीछे रह गए थे. यह वायरस की वजह से नहीं था, बल्कि उसके बाद पैदा हुई परिस्थितियों की वजह से था.

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मस्तिष्क का 90 प्रतिशत विकास पांच वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है, जिससे प्रारंभिक वर्ष बच्चे के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक भविष्य को आकार देने का सबसे बड़ा अवसर बन जाते हैं. इस दौरान बनने वाले तंत्रिका संबंध सीखने, भाषा, स्मृति और जीवन भर के लिए लचीलेपन को मजबूत करते हैं. इस अवधि में सही पोषण प्राप्त करना सबसे शक्तिशाली निवेशों में से एक है जो हम कर सकते हैं. आयरन, जिंक और सेलेनियम जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व, जिन्हें अक्सर तंत्रिका पोषक तत्व कहा जाता है, स्वस्थ मस्तिष्क विकास और कार्य के लिए आवश्यक हैं. फिर भी आंकड़े एक चिंताजनक कहानी बयां करते हैं. अकेले आयरन की कमी भारत में पांच वर्ष से कम आयु के लगभग 50 प्रतिशत बच्चों को प्रभावित करती है. एनएफएचएस-5 के अनुसार, पांच वर्ष से कम आयु के 67.1 प्रतिशत बच्चों में एनीमिया दर्ज किया गया, जो पिछले सर्वेक्षण से अधिक है. 12-59 महीने की आयु के बच्चों के राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि विश्लेषण सहित हाल के साक्ष्यों से पता चला है कि 60 प्रतिशत से अधिक बच्चों में एनीमिया के साथ या उसके बिना सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी थी. यह अकेले हीमोग्लोबिन की संख्या से कहीं अधिक व्यापक पोषण संबंधी अंतर की ओर इशारा करता है. डोकोसाहेक्सानोइक एसिड (डीएचए), एक ओमेगा-3 फैटी एसिड, मस्तिष्क की संरचना, स्मृति निर्माण और दृश्य विकास में सहायक होता है.

कोलीन, एक अन्य आवश्यक पोषक तत्व, अब मस्तिष्क के विकास के लिए अनिवार्य माना जाता है. जब माताएं गर्भावस्था के दौरान कोलीन का सेवन करती हैं, तो यह स्वस्थ जीन गतिविधि और कोशिका संरचना, तथा मस्तिष्क के प्रमुख क्षेत्रों - जिनमें स्मृति और चिंतन के लिए जिम्मेदार क्षेत्र शामिल हैं - के विकास में सहायक होता है. ये पोषक तत्व बच्चे के आहार में वैकल्पिक नहीं हैं, बल्कि उनकी क्षमता के लिए मूलभूत हैं.

बच्चे के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण पोषण संबंधी हस्तक्षेप जन्म से पहले ही शुरू हो जाता है. मस्तिष्क का विकास भ्रूण अवस्था में ही शुरू हो जाता है और मां की पोषण स्थिति सीधे तौर पर उस तंत्रिका आधार को आकार देती है जिससे बच्चा जन्म लेता है. डीएचए गर्भ में तंत्रिका संपर्क को सहारा देता है. गर्भावस्था के दौरान आयरन और फोलिक एसिड का सेवन कम जन्म वजन और विकास में देरी के जोखिम को कम करता है. फिर भी भारत में केवल 44 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं ने अनुशंसित 180 या उससे अधिक दिनों तक आयरन-फोलिक एसिड सप्लीमेंट का सेवन किया. यह एक बहुत बड़ा और लक्षित करने योग्य अवसर प्रस्तुत करता है. यही कारण है कि किशोरियों में निवेश करना अगली पीढ़ी में निवेश करना है.

(लेखक, नई दिल्ली के मधुकर रेनबो चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल में बाल चिकित्सा गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के वरिष्ठ सलाहकार और न्यूट्रिशन सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष हैं.)

महाकौशल की डायरी

आए थे ऊर्जा भरने, देख गए गुटबाजी की झलक....

अविनाश दीक्षित

जब अपने ही भितरघात, आपसी विवाद कर एकजुटता को भंग करते नजर आएं तो फिर विपक्ष या प्रतिद्वंदी की क्या जरूरत है..ये कहावत एक बार फिर से शहर कांग्रेस कमेटी में फिट बैठी है. हूआ यूं कि कांग्रेस के दिग्गज नेता, पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल विगत दिनों शहर पहुंचे, उनसे कार्यकर्ताओं का मेल जोल का सिलसिला शुरू हुआ, इसी दौरान कांग्रेस का एक गुट असंतुष्ट नजर आया. सोशल मीडिया में कुछ ऐसी टिप्पणियां हुईं जिससे पार्टी की एकजुटता फिर सवालिया घेरे में खड़ी दिखी.

आलम ये था कि अजय सिंह के जबलपुर दौरे के दौरान गुटबाजी देखकर कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता और उनके समर्थक भी दूरी बनाते नजर आए. गिने चुने कांग्रेसियों ने आरोप लगाए कि पूर्व नेता प्रतिपक्ष कांग्रेस के ऐसे नेताओं के घर गए जिनका कोई प्रभाव नहीं हैं और उनके घर नहीं गए जिनका प्रभाव शहर की राजनीति में अधिक है. बस यही बात कांग्रेसियों को खटकी और फिर राजनैतिक गलियारों में चर्चाएं तेज हो गईं हुईं. माना जा रहा था कि शहर कांग्रेस में नई ऊर्जा भरने और संगठन को मजबूर करने के उद्देश्य से अजय सिंह राहुल जबलपुर आए थे. उन्होंने क्या आंकलन किया, यह वही जानते हैं, मगर खबर है कि प्रदेश कांग्रेस के आला नेताओं तक जबलपुर कांग्रेस में गुटबाजी की शिकायत फिर से पहुँच गई है. अब ये देखना दिलचस्प होगा कि संगठन इस गुटबाजी को थामने में सफल होता है या फिर ऐसे ही पार्टी में आंतरिक कलह चलते आगामी विधानसभा, नगर निगम चुनाव में इसके दुष्प्रभाव को झेलेगा.

फिलहाल संगठन में जो स्थिति नजर आ रही है उससे तो ये बिल्कुल स्पष्ट नजर आ रहा है कि कांग्रेस से असंतुष्ट नेता ध्यानाकर्षण में ही जुटे हुए हैं. वहीं कांग्रेस के जानकारों का भी मानना है कि जबलपुर कांग्रेस लंबे समय से गुटीय राजनीति का शिकार रही है. शहर और जिला अध्यक्षों की नियुक्ति के बाद संगठन का पूरा ढांचा बन चुका है तथा संगठन के पदाधिकारियों की लंबी चौड़ी फौज भी बन चुकी है, किन्तु कांग्रेसी कुनबे में कमी सिर्फ एकजुटता की नजर आ रही है.

जबलपुर के हितों में बार-बार हो रही चोट, जिम्मेदारों क्यों हैं मौन...

अतीत में जबलपुर कई संस्थान खो चुका है और हर बार शहर के नागरिक सिर्फ अफसोस ही कर पाए हैं. यदि इस बार भी समय रहते आवाज नहीं उठाई गई तो आने वाली पीढ़ियां इसे शहर की एक और बड़ी चूक के रूप में याद करेंगी. कभी पर्यटन विकास के नाम पर, तो कभी जबलपुर को उपराजधानी बनाने के नाम पर, कभी हवाई सेवा के नाम पर जबलपुर के साथ हमेशा से छलावा होता आ रहा है. अब एक बार फिर संस्कारधानी अपने हक से वंचित होने की कगार पर खड़ी नजर आ रही है. खबर है कि सरकार द्वारा शहर के गौरवपूर्ण पहचान वाली मेडिकल साइंस यूनिवर्सिटी को 3 हिस्सों में बांटने का प्रारंभिक खाका तैयार हो चुका है. यह विषय विभिन्न सूचना माध्यम में सुर्खियां बटोर चुका है, बावजूद इसके शहर के जिम्मेदारों, जनप्रतिनिधियों ने चुप्पी साधी हुई है और ये चुप्पी अब अपने आप में कई सवाल खड़े करती नजर आ रही है. सवाल पूछे जा रहे हैं कि जब शहर के हितों पर बार बार चोट हो रही है, तब राजनीतिक दलों, मेडिकल एसोसिएशन, कर्मचारी संगठनों, सामाजिक संस्थाओं और बुद्धिजीवियों की आवाज आखिर कहां दबी है..? हर मुद्दे पर बयान देने वाले कई संगठन इस गंभीर विषय पर अब तक खुलकर सामने क्यों नहीं आए हैं..? उधर जागरूक शहरवासी सोशल मीडिया में ये कहते भी नजर आ रहे हैं कि जब तक जबलपुर में एकजुट आंदोलन नहीं होगा तब तक सरकार ऐसे निर्णयों पर पुनर्विचार नहीं करेगी. विकास का सब्जबाग दिखाकर जनता के वोट हासिल करने वाले निर्वाचित जन प्रतिनिधियों से मौन साधना से बाहर निकल कर जबलपुर के हितचिंतन की अपेक्षा की जा रही है. सर्वविदित है कि जबलपुर स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के क्षेत्र को कम करके छिंदवाड़ा में नया विश्वविद्यालय बना दिया गया था और अभी पिछले वर्ष ही जबलपुर वेटरनरी विश्वविद्यालय का विखंडन करके डेयरी साईंस कॉलेज को जबलपुर से उज्जैन स्थानांतरित कर दिया गया था.

अजीत की पार्टी का संतुलन बिगड़ा

अजीत पवार के निधन के बाद राकांपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार को निर्वाचित किया गया. इसके बाद पार्टी की ओर से चुनाव आयोग को दिए गए पत्र में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों की सूची पेश की गई. इसमें प्रफुल पटेल, छगन भुजबल, सुनील तटकरे जैसे बड़े नेताओं के नाम कार्यकारिणी में नदारद हैं. 29 अप्रैल 2026 की तारीख वाली यह सूची वायरल होने से पार्टी के भीतर की कलह सामने आ गई है. यद्यपि सुनेत्रा पवार ने सफाई दी है कि क्लेरिकल मिस्टेक से ऐसा हुआ है जिसे शीघ्र ही दुरुस्त किया जाएगा लेकिन इससे संदेश यही गया है कि पार्टी में सब कुछ ठीक नहीं है. यह बात छुपी नहीं है कि सुनेत्रा पवार की जल्दबाजी में उपमुख्यमंत्री पद की शपथ देखते हुए पार्टी की कमान अपने हाथ में लेने का प्रयत्न पटेल व तटकरे ने बीजेपी की मदद से किया था. शरद पवार की राकांपा के साथ विलीनीकरण की चर्चा शुरू होने पर तटकरे ने सवाल उठाया था कि विलय किसका और किसके साथ ? अब सुनेत्रा पवार के पास राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा विधानमंडल में पार्टी नेता पद की जिम्मेदारी आ गई है तथा पार्थ पवार को महासचिव व जय पवार को राष्ट्रीय सचिव की जिम्मेदारी दी गई है. अजीत पवार के बाद अब पार्टी का प्रखर अस्तित्व दिखाई नहीं देता. नेता व कार्यकर्ता भी दिग्भ्रमित हैं कि किससे निर्देश लें. सुनेत्रा पवार व उनके पुत्र पार्थ पवार की पार्टी व प्रशासन पर पहले जैसी पकड़ नहीं नजर आती. सत्ता में रहने के बावजूद राजनीतिक दृष्टि से पार्टी की ताकत घट रही है. पार्टी को वित्त मंत्रालय फिर से मिलने की शाश्वती नहीं होने से निधि को लेकर विधायकों में बेचैनी बढ़ रही है. विलीनीकरण के मुद्दे पर एकजुटता नहीं है. ऐसी स्थिति में पार्टी में फूट पड़ने की आशंका बढ़ चली है. बीजेपी ऐसी स्थिति का फायदा उठाती है कि क्षेत्रीय पार्टियों को कमजोर कर अपनी मजबूती बढ़ाओ. पश्चिम महाराष्ट्र व सहकारिता क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा चुकी बीजेपी को अब राकांपा से सहयोग की उतनी आवश्यकता नहीं रह गई है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

प्रमोशन लेने से किया इनकार कांस्टेबल को अपने पद से प्यार

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, दिल्ली में मनीष नामक सब इन्स्पेक्टर ने मांग की कि उसका प्रमोशन रद्द कर उसे फिर से पहले की तरह कांस्टेबल बना दिया जाए. उत्तर-पूर्व जिला पुलिस प्रशासन ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और डिमोशन कर उसे फिर से कांस्टेबल बना दिया. यह कितना अजीब मामला है!'

हमने कहा, 'कहावत है- नीम के कीड़े को नीम ही मीठी लगती है. मनीष कांस्टेबल के रूप में अपनी यथास्थिति से संतुष्ट था. अपनी काबिलियत साबित करने के लिए उसने पुलिस की डिपार्टमेंटल परीक्षा दी. उसमें उत्तीर्ण होने पर उसे सब इन्स्पेक्टर के रूप में पदोन्नति दी गई लेकिन उसकी अंतरात्मा ने कहा कि बेटा क्या रखा है प्रमोशन में! फिर से सिपाही बन जा. अपनी पुरानी बीट संभाल ले जहां तेरा लोगों से संपर्क या आपसी हित-संबंध बना हुआ है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह भी हो सकता है कि वह कांस्टेबल निस्वार्थ और त्यागी होगा. उसे लगा होगा कि क्या प्रमोशन और क्या डिमोशन ! यह सब दुनिया की मोह-माया है इसलिए वह 'जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिए' का भजन करते हुए कांस्टेबल बने रहने को ही तैयार है. पदोन्नति का प्रलोभन उसने ठुकरा दिया. वह सिपाही नहीं संत होगा!'

हमने कहा, 'लोग तो उसे बेवकूफ मान रहे होंगे जिसने आती लक्ष्मी को ठुकरा दिया. प्रमोशन बड़ी किस्मत से मिलता है लेकिन अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारते हुए उसने यह सुअवसर खो दिया. उसने सुमति की बजाय कुमति दिखाई. उसकी पत्नी और बच्चे कितने निराश हुए होंगे!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह मत समझिए कि उस पुलिसकर्मी की अक्ल पर पत्थर पड़ गए. एक पुरानी कथा है कि एक चूहा हमेशा बिल्ली से भयभीत रहा करता था. एक साधु-महात्मा ने उससे कहा कि डरने की जरूरत नहीं. मैं तुझे जो चाहे बना सकता हूं. चूहे ने कहा कि मुझे बिल्ली बना दो. बिल्ली बन जाने पर वह कुत्ते से डरने लगा. उसे कुत्ता बनाने पर वह शेर से डरा तो महात्मा ने उसे शेर बना दिया. फिर वह बादलों की गर्जना से डरा तो महात्मा ने उसे बादल बनाया. बादल का घमंड पर्वत से टकराने पर चूर-चूर हो गया तो उसके कहने पर उसे पहाड़ बनाया गया. पहाड़ बनने के बाद उसे समझ में आया कि पहाड़ में चूहा भी छेद कर सकता है तो उसकी प्रार्थना पर महात्मा ने उसे फिर से चूहा बना दिया. कांस्टेबल का भी ऐसा ही किस्सा है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12258 - डॉ. सागर खादीवाला

बड़ा तिनका

ऊपर से नीचे

1. मकान के आगे धूप-वर्षा से बचने के लिए टीन आदि का छालन 2. सुनने की क्रिया, ध्वनि, वार्ता, कान (सं) 3. युवावस्था या उससे कुछ पहले की अवस्था का पुरुष 4. दूध की एक रसदार मिठाई 5. कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि 8. फाड़कर जमाया हुआ दूध, पानी निकाला हुआ दही 9. झरना, निर्झर 11. एक फल जिसकी तरकारी बनती है 13. तर्क-वितर्क, बहस 16. आग पर रखकर गलाना या तैयार करना 17. मनुष्यों या पशुओं की छाती में की आड़ी और गोलाकर हड्डी 19. नौ प्रसिद्ध तारे जो सूर्य के चारों ओर घूमते हैं 20. आघात करना, वध करना 22. एक प्रकार का छोटा बाजा

बाएं से दाएं

1.जिसमें आंसू भरे हुए हो, आं में आंसू भर के (सं.) 3. बैठने के लिए ऊंचे पायों का एक आसन जिस पर पीठ को पीछे टिकाने के लिए पट्टी एवं हाथों को सामने रखने के लिए हत्था लगा रहता है 6. जितेंद्रिय, मोक्ष का इच्छुक, संन्यासी, ब्रम्हचारी (सं.) 7. महीना 8. जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो 9. जल, पानी, पुष्प रस (सं.) 10. नट की स्त्री, नट जाति की स्त्री 12. जिसका कोई मालिक न हो 14. आघात, लक्ष्य, लड़ाई, बहुत 15. खुशी का दिन, मुसलमानों का मजहबी त्योहार 16. पर्दा, दरवाजे के किवाड़, औंधा 18. दूर या अलग करना, कलह, फूट 21. बारूद की भरी हुई नली जिसे बंदूक में भरकर चलाते हैं 23.सवारी 24. सींक,

Solution 12257

नि	यु	क्ति			बै	रं	ग
वां			आ	मू	ल		ल
स	त्का	र	मू	र्ति		ख्वा	ब
न			ल	का	र		हि
	अ	म	चू	र			यों
द	ल	द	ल		पा	स	
रा	ग			रा	ह	गी	र
ज		प	ट	स	न		स्सी

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनिश्चय की राजनीति का सामना करना होगा, व्यापार में विशेष परिश्रम करना होगा, स्वास्थ्य गड़गड़ रहेगा, चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष प्रयत्न करने से कार्यबनेगा, वर्ष के मध्य में यात्रा होगी, कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में अधिकारियों से मेलजोल रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को विशेष चिकित्सा के क्षेत्र मेंसफलता मिलेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को राजनेतिक अस्थिरता का सामना करना होगा, सिंह राशि के व्यक्तियोंको अचानक धन लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को सुखद यात्रा होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्थितियों से संयम सतर्कता रखना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख, मिलनसार होगा, जन्म स्थान सू दूर रहकर अपनी उन्नति करेगा, अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, आय के एक से अधिक साधन उपलब्ध होंगे, विशेष विद्या का ज्ञाता होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

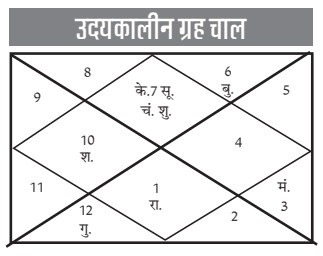

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी भृगुवासरे प्रात: 5/52 तदुपरि चर्तुदशी तिथौ रात 3/51, अश्विनी नक्षत्रे शाम 6/44, आयुष्मान योगे दिन 12/49, वणिज करणे सू.उ. 5/23, सू.अ. 6/37, चन्द्रचार मेष, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक-3,5,9.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी/चर्तुदशी को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, के भाव में तेजी होगी, गेहूँ, जौ, चना, गुड़, खांड़ मूँग, मोठ, अरहर के भाव में तेजी होगी, भाग्यांक 2623 है.

मेष- अनुभवी लोगों की सलाह से दुविधा दूर होगी, खानपान पर ध्यान रखें, आर्थिक लेनदेन में सावधानी, कार्य की अधिकता रहेगी.

वृषभ- अनहोनी का भय रहेगा, सामाजिक कार्य में आपकी उपस्थिति प्रसन्नता देगी, संतान के कारण भावनात्मक पीड़ा हो सकती है, खानपान पर संयम रखें.

मिथुन- कार्यस्थल पर सुधार के लिये दिन-रात एक कर देंगे, दाम्पत्य सुख मिलेगा, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, मित्रों का समागम होगा.

कर्क- जरूरी कार्य के लिये किसी का सहयोग लेना पड़ेगा, मित्र के रूखे व्यवहार से खिन्नताहोगी, शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ेगा, लाभ में कमी आयेगी.

सिंह- कार्य की गति धीमी होने से परेशानी होगी, लेनदेन की चिन्ता बनी रहेगी, आकस्मिक खर्च होने का योग है, निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

कन्या- स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पायेंगे, समय पर सोचे हुये कामकाज बनने का योग है, मान सम्मान की प्राप्ति होगी, विद्यार्थी वर्ग को परिश्रम होगा.

तुला- लाभकारी योजना बनेगी, भावनात्मक संबंधों में मधुरता आयेगी, विशेष श्रम एवं प्रयास करने का योग है, मन: स्थिति संतोषप्रद रहेगी.

वृश्चिक- मेहमानों की आवाजाही से घर में उल्लास का माहौल रहेगा, नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा, शीघ्र कार्य शुभारंभ होगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

धनु- समय पर कार्य न होने से परेशानी होगी, नौकरी संबंधी प्रयासों में सफलता मिलेगी, राजकीय सहयोग मिलेगा, सुविधाओं की वृद्धि होगी.

मकर- विरोधी की चालों से सावधान रहें, राजकीय मामले आपसी बातचीत से सुलझ सकते हैं, धार्मिक सत्संग से मानसिक प्रसन्नता रहेगी, नियमितता से कार्य करें.

कुम्भ- आय के नये स्त्रोत बनेंगे, शारीरिक शिथिलता रहेगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी, विवादों को टालने का प्रयास करें.

मीन- सहूलियत के हिसाब से कार्य योजना में परिवर्तन कर लेंगे, अधिकारी सहमत होंगे, कार्यों की अधिकता रहेगी, जीवनसाथी का सहयोग रहेगा.

SUDOKU 7390

2		8	5	1	9	6		7
					8			1
		7	4	6		8		9
3	2				7			8
1		9		4		7		5
4			2				9	3
6		3		5	1	9		
8			3					
7		1	9	2	6	3		4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7389

7	1	9	8	5	3	2	6	4
4	5	3	6	2	9	7	1	8
6	2	8	4	7	1	9	5	3
9	8	2	7	3	5	1	4	6
1	3	6	9	4	8	5	7	2
5	7	4	1	6	2	8	3	9
8	4	7	5	9	6	3	2	1
3	6	1	2	8	7	4	9	5
2	9	5	3	1	4	6	8	7